त्वरित चारा विकास कार्यक्रम
सफलता की कहानी
दुग्ध समिति लक्ष्मीखेड़ा (जिला शाजापुर)

दुग्ध सहकारी समिति लक्ष्मीखेड़ा का पंजीयन क्रमांक 157 दिनांक 25.4.1980 के द्वारा किया जाकर समिति द्वारा दूध संकलन कार्य प्रारंभ किया गया। प्रारंभ में समिति में 25 दूध उत्पादकों द्वारा अंशपूंजी एकत्रित कर समिति की सदस्यता ग्रहण की गई। धीरे धीरे समिति द्वारा सदस्य संख्या में वृद्धि की गई। वर्तमान में समिति के सदस्यों की संख्या 68 है। पूर्व में ग्राम के लोग दूध विक्रय आगर शहर में कर रहे थे जिसका विक्रय मूल्य कम प्राप्त होने के कारण गॉव के लोगों की दूध उत्पाद में रूचि कम थी।

दुग्ध संघ द्वारा ग्राम में दुग्ध समिति का गठन किया गया जिससे दूध का उचित मूल्य मिलने लगा और दुग्ध उत्पादकों की दूध के प्रति रूचि उत्पन्न हुई। प्रारंभ में दुग्ध संकलन 50 लीटर प्रति दिन से प्रारंभ हुआ जो वर्तमान में 250 लीटर प्रति दिन है।

श्री रामचन्द्र, पिता बापूलालजी, निवासी लक्ष्मीखेडा समिति में सक्रिय सदस्य हैं। प्रारंभ में समिति में प्रति दिन 4 लीटर दूध प्रदाय करते थे। वर्तमान में संस्था में प्रति दिन 12 लीटर दूध प्रदाय कर रहे है। भारत सरकार की योजना अंतर्गत **त्वरित चारा विकास कार्यक्रम** के अन्तर्गत उज्जैन दुग्ध संघ द्वारा (समिति के

माध्यम) से मक्का, चरी, बरसीम बीज प्रदाय किया गया। गॉव में तालाब होने से पानी की समस्या नहीं है। त्वरित चारा विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत संघ से चारा बीज प्राप्त हुआ जिसे पशुओं को खिलाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हुई। प्रारंभ में केवल 2 दुधारू पशु थे जिससे 6 लीटर दूध प्रति दिन प्राप्त हो रहा था। हरे चारे के बीज मिलने के पश्चात दूध उत्पादन में रूचि बड़ी। हरे चारे से पशुओं के लिये सभी आवश्यक तत्व होते है जो पशु को स्वस्थ रखते है। गॉव के अन्य दुग्ध उत्पादकों को भी हरे चारे से होने वाले लाभ के बारे में बताया गया। शासन द्वारा त्वरित चारा विकास योजना के अन्तर्गत दूध उत्पादकों को लाभ भी मिल रहा है।